वरुथिनी एकादशी पर इन शुभ योग के दौरान करें भगवान विष्णु की पूजा

इस साल वरुथिनी एकादशी 4 मई को मनाई जाएगी। इस दिन भगवान विष्णु के साथ माता लक्ष्मी की पूजा होती है। इस बार यह दिन बेहद शुभ माना जा रहा है क्योंकि ज्योतिष की दृष्टि से इस दिन कई शुभ योगों का निर्माण हो रहा है। ऐसी मान्यता है कि इस दौरान पूजा करने से अक्षय फलों की प्राप्ति होती है।

हिंदू धर्म में एकादशी तिथि का खास महत्व है। यह दिन श्री हरि के साथ माता लक्ष्मी की पूजा के लिए समर्पित है। वैशाख मास में पड़ने वाली एकादशी तिथि को वरुथिनी एकादशी के नाम से जाना जाता है। ऐसा कहा जाता है, जो साधक इस कठिन व्रत का पालन करते हैं उन्हें धन और वैभव का वरदान मिलता है। इसके अलावा घर खुशियों से भरा रहता है। इस साल यह एकादशी 4 मई, 2024 दिन शनिवार को मनाई जाएगी। वहीं, इस शुभ तिथि पर कई शुभ योगों का निर्माण हो रहा है। कहा जा रहा है इस दौरान पूजा करने से भगवान विष्णु खुश होते हैं।

इन शुभ योगों में करें भगवान विष्णु की पूजा

वैदिक पंचांग के अनुसार, वरुथिनी एकादशी के दिन त्रिपुष्कर योग, इंद्र योग और वैधृति योग का निर्माण हो रहा है। ज्योतिष की दृष्टि से ये सभी योग बेहद शुभ माने गए हैं। ऐसा कहा जाता है अगर इस दौरान प्रभु विष्णु की पूजा की जाए, तो व्रत का पूरा फल मिलता है। साथ ही भाग्योदय भी होता है। वरुथिनी एकादशी के दिन त्रिपुष्कर योग प्रातः 4 बजकर 3 मिनट पर शुरू होगा। वहीं, इसका समापन शाम 5 बजकर 12 मिनट पर होगा। इसके साथ ही इंद्र योग पूरे दिन रहेगा। इसके अलावा वैधृति योग प्रातः 8 बजकर 24 मिनट से एकादशी तिथि के समाप्त होने तक रहेगा।

इस दिन रखा जाएगा उपवास

इस साल वरुथिनी एकादशी का उपवास 4 मई, 2024 दिन शनिवार को रखा जाएगा। हिंदू पंचांग के अनुसार, 03 मई, 2024 दिन शुक्रवार को रात्रि 11 बजकर 24 मिनट पर वैशाख माह के कृष्ण पक्ष के एकादशी तिथि की शुरुआत होगी। वहीं, इसका समापन अगले दिन 4 मई, 2024 दिन शुक्रवार को रात्रि 08 बजकर 38 मिनट पर होगा। उदयातिथि को ध्यान में रखते हुए 4 मई को वरुथिनी एकादशी का व्रत रखा जाएगा।

वरुथिनी एकादशी 2024

तिथि, पारण समय, अनुष्ठान और महत्व

वरुथिनी एकादशी, अद्वितीय महत्व और कहानियों के साथ भगवान विष्णु के व्रत को समर्पित दिन। 4 मई, 2024 को घटित होगा, जो बुरी ऊर्जा से सुरक्षा प्रदान करेगा। इसमें हिंदू धर्मग्रंथ, भगवान शिव, भगवान ब्रह्मा और विशेष पूजा अनुष्ठान शामिल हैं। भक्त एकादशी के इस शुभ दिन पर सख्त उपवास रखते हैं और इस दिन को भगवान विष्णु की पूजा के लिए समर्पित करते हैं।

व्रत करने के लिए एकादशी को सबसे शुभ दिन माना जाता है। हिंदू धर्म के अनुसार, यह दिन भगवान विष्णु की पूजा के लिए समर्पित है । इस दिन, दुनिया भर में विष्णु भक्त उपवास रखते हैं और विभिन्न धार्मिक और आध्यात्मिक गतिविधियाँ करते हैं। वर्ष में कुल 24 एकादशियाँ मनाई जाती हैं और प्रत्येक माह में दो एकादशियाँ शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष के दौरान आती हैं।

प्रत्येक एकादशी का विशेष महत्व होता है और उसकी अलग-अलग कहानी होती है। इस बार वरुथिनी एकादशी होगी, जो 4 मई 2024 को वैशाख माह के कृष्ण पक्ष में आने वाली है।

हिंदू धर्मग्रंथों के अनुसार, हिंदुओं के बीच एकादशी का बड़ा धार्मिक महत्व है। वरुथिनी एकादशी पूर्णिमांत कैलेंडर के अनुसार वैशाख महीने में आती है और अमावस्यांत कैलेंडर के अनुसार यह चैत्र महीने में आती है, जिसे दक्षिण भारत में माना जाता है। भक्त एकादशी के इस शुभ दिन पर सख्त उपवास रखते हैं और इस दिन को भगवान विष्णु की पूजा के लिए समर्पित करते हैं। वे पूजा और विभिन्न धार्मिक गतिविधियाँ करते हैं। कुछ भक्त ध्यान योग और मेडिटेशन जैसी आध्यात्मिक गतिविधियों में भी शामिल हो जाते हैं और अपने मन को शांत और आराम देने के लिए एक दिन के लिए मौन व्रत रखते हैं। इस एकादशी को बरुथनी एकादशी के नाम से भी जाना जाता है। इस दिन, लोग भगवान विष्णु के वामन अवतार की पूजा करते हैं और ऐसा माना जाता है कि इस एकादशी पर व्रत रखने से लोग किसी भी प्रकार की बुरी ऊर्जा और नकारात्मकता से सुरक्षित रहते हैं।

हिंदी शास्त्रों के अनुसार माना जाता है कि एक दिन भगवान शिव ब्रह्मा जी से क्रोधित हो गए और अपना पांचवां सिर हटा दिया। भगवान ब्रह्मा ने भगवान शिव को श्राप दिया और इस श्राप से मुक्त होने के लिए भगवान विष्णु ने उन्हें वरुथिनी एकादशी व्रत करने का सुझाव दिया। उन्होंने भगवान विष्णु के सुझाव के अनुसार ही किया और इस श्राप से मुक्त हो गए, इसलिए यह माना जाता है कि जो कोई भी सोचता है कि वह वर्तमान जन्म या पिछले जन्म से संबंधित किसी भी प्रकार के श्राप से पीड़ित है या उन्हें लगता है कि उन्होंने किसी के साथ कुछ गलत किया है। जाने-अनजाने में उन्हें श्राप से मुक्ति पाने के लिए श्रद्धापूर्वक इस एकादशी का व्रत करना चाहिए और भगवान विष्णु से क्षमा मांगनी चाहिए। यह भी माना जाता है कि जो भक्त इस दिन पूरे समर्पण के साथ व्रत रखते हैं, भगवान विष्णु उन्हें कठोर तपस्या से प्राप्त फल प्रदान करते हैं।

वरुथिनी एकादशी पूजा अनुष्ठान

सुबह जल्दी उठें और सबसे पहले स्नान करें। उन्हें घर और विशेष रूप से पूजा कक्ष को साफ करना चाहिए जहां वे पूजा करना चाहते हैं। भगवान विष्णु की मूर्ति, लड्डू गोपाल, यदि उनके पास हो तो और भगवान कृष्ण की मूर्ति लें। उन्हें स्नान कराएं और एक लकड़ी के तख्ते पर रखें। उन्हें फूलों, वस्त्रों से सजाएं. दीया जलाएं और उनके माथे पर तिलक लगाएं। फल, तुलसी पत्र, या जो कुछ भी आपने पूजा के लिए तैयार किया है जैसे पंचामृत और घर पर बनी मिठाई रखें। भगवान विष्णु का आशीर्वाद पाने के लिए विष्णु सहस्रनाम का पाठ करें और विभिन्न मंत्रों का जाप करें। अगले दिन पारण के समय व्रत खोला जाता है। जो लोग सख्त उपवास करने में असमर्थ हैं, वे सात्विक भोजन खा सकते हैं जिसमें फल, दूध से बने उत्पाद, दही के साथ तले हुए आलू शामिल हैं। उन्हें सामान्य नमक की जगह सेंधा नमक का उपयोग करने की सलाह दी जाती है।

मंत्र

- ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय..!!
- श्री कृष्ण गोविंद हरे मुरारी हे नाथ नारायण वासुदेवा..!!
- हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे, हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे..!!
- राम राम रामेति रमे रामे मनोरमे, सहस्त्रनाम ततुल्यं राम नाम वरानने..!!
- अच्युतम केशवम् कृष्ण दामोदरम राम नारायणम् जानकी वल्लभम..!!

वरुथिनी एकादशी पर करें मां लक्ष्मी के नामों का मंत्र जप, आर्थिक तंगी होगी दूर

हर वर्ष वैशाख माह के कृष्ण पक्ष की दशमी तिथि के अगले दिन वरुथिनी एकादशी का व्रत रखा जाता है। इस वर्ष वरुथिनी एकादशी 04 मई को है। इस दिन भगवान विष्णु एवं धन की देवी मां लक्ष्मी की पूजा-अर्चना की जाती है। साथ ही एकादशी व्रत रखा जाता है।

इस व्रत के पुण्य प्रताप से जातक के जीवन में व्याप्त सभी दुख और संकट दूर हो जाते हैं। साथ ही घर में सुख, समृद्धि एवं शांति आती है। अगर आप भी अपने जीवन में आर्थिक विषमता से गुजर रहे हैं, तो धन की समस्या दूर करने के लिए वरुथिनी एकादशी पर विधि-विधान से भगवान विष्णु संग मां लक्ष्मी की पूजा करें। साथ ही पूजा के समय मां लक्ष्मी के नामों का मंत्र जप करें।

वरुथिनी एकादशी के दिन घर पर करें इस विधि से तुलसी पूजा, सभी दुखों से मिलेगा छुटकारा

वैशाख महीने में आने वाली एकादशी तिथि को वरुथिनी एकादशी के नाम से जाना जाता है। इस दौरान श्री हरि विष्णु के साथ माता लक्ष्मी और देवी तुलसी की पूजा होती है। इस साल यह एकादशी 4 मई को मनाई जाएगी। ऐसा कहा जाता है जो भक्त इस दिन भाव के साथ पूजा-अर्चना करते हैं उनके सभी कष्टों व पापों का नाश होता है।

सनातन धर्म में एकादशी तिथि का खास महत्व है। इस दिन भगवान विष्णु के साथ मां लक्ष्मी और देवी तुलसी की पूजा होती है। वैशाख मास में पड़ने वाली एकादशी तिथि को वरुथिनी एकादशी के नाम से जाना जाता है। ऐसा माना जाता है, जो जातक इस कठिन व्रत का पालन करते हैं उन्हें सुख-शांति का वरदान मिलता है। इसके अलावा घर खुशियों से भरा रहता है। इस साल यह एकादशी 4 मई, 2024 दिन शनिवार को मनाई जाएगी। वहीं, अगर इस शुभ तिथि पर देवी तुलसी की पूजा विधि अनुसार की जाए, तो जीवन में धन-वैभव की कभी कमी नहीं रहती है।

कब है वरुथिनी एकादशी

इस साल वरुथिनी एकादशी का उपवास 4 मई, 2024 दिन शनिवार को रखा जाएगा। हिंदू पंचांग के अनुसार, 03 मई, 2024 दिन शुक्रवार को रात्रि 11 बजकर 24 मिनट पर वैशाख माह के कृष्ण पक्ष के एकादशी तिथि की शुरुआत होगी। वहीं इसका समापन 4 मई, 2024 दिन शुक्रवार को रात्रि 08 बजकर 38 मिनट पर होगा। उदयातिथि को देखते हुए 4 मई को वरुथिनी एकादशी का व्रत रखा जाएगा।

वरुथिनी एकादशी पर ऐसे करें तुलसी पूजा

- व्रती सुबह उठकर पवित्र स्नान करें और घर की सफाई करें।
- भगवान शालिग्राम को उनके साथ स्थापित करें।
- गंगाजल, पंचामृत और जल चढ़ाएं।
- कुमकुम व गोपी चंदन, हल्दी का तिलक लगाएं।
- तुलसी के पौधे को साड़ी या दुपट्टे और अन्य सामान के साथ खूबसूरती से सजाएं।
- शालिग्राम जी का श्रृंगार करने के लिए पीले वस्त्रों का प्रयोग करें।
- भगवान शालिग्राम और देवी तुलसी को फूलों की माला अर्पित करें।
- इस शुभ अवसर पर कीर्तन और भजन का आयोजन कर सकते हैं।
- विभिन्न सात्विक भोग प्रसाद सामग्री अर्पित करें।
- वैदिक मंत्रों का जाप करें।
- देवी तुलसी और भगवान विष्णु की आरती करें।
- सभी अनुष्ठानों को पूरा करने के बाद प्रसाद को परिवार के सदस्यों के बीच बांटे।
- पूजा में हुई गलती के लिए क्षमा प्रार्थना करें।
- अगले दिन अपना व्रत खोलें।

भगवान श्रीकृष्ण ने दिया हर रिश्ते को महत्व

भगवान श्रीकृष्ण के हजारों सखा या कहें कि मित्र थे। श्रीकृष्ण के सखा सुदामा, श्रीदामा, मधुमंगल, सुबाहु, सुबल, भद्र, सुभद्र, मणिभद्र, भोज, तोककृष्ण, वरूथप, मधुकंड, विशाल, रसाल, मकरन्द, सदानन्द, चन्द्रहास, बकुल, शारद, बुद्धिप्रकाश, अर्जुन आदि थे। श्रीकृष्ण की सखियां भी हजारों थीं। राधा, ललिता आदि सहित कृष्ण की 8 सखियां थीं। ब्रह्मवैवर्त पुराण के अनुसार सखियों के नाम इस तरह हैं- चन्द्रावली, श्यामा, शैव्या, पद्मा, राधा, ललिता, विशाखा तथा भद्रा। कुछ जगह ये नाम इस प्रकार हैं- चित्रा, सुदेवी, ललिता, विशाखा, चम्पकलता, तुंगविद्या, इन्दुलेखा, रंगदेवी और सुदेवी। कुछ जगह पर ललिता, विशाखा, चम्पकलता, चित्रादेवी, तुंगविद्या, इन्दुलेखा, रंगदेवी और कृत्रिमा (मनेली)। इनमें से कुछ नामों में अंतर है। इसके अलावा भौमासुर से मुक्त कराई गईं सभी महिलाएं कृष्ण की सखियां थीं। द्रौपदी भी श्रीकृष्ण की सखी थीं। श्रीकृष्ण ने सभी के साथ अंत तक मित्रता का संबंध निभाया।

प्रेमी कृष्ण

कृष्ण को चाहने वाली अनेक गोपियां और प्रेमिकाएं थीं। कृष्ण-भक्त कवियों ने अपने काव्य में गोपी-कृष्ण की रासलीला को प्रमुख स्थान दिया है। पुराणों में गोपी-कृष्ण के प्रेम संबंधों को आध्यात्मिक और अति श्रांगारिक रूप दिया गया है। महाभारत में यह आध्यात्मिक रूप नहीं मिलता, लेकिन पुराणों में मिलता है। उनकी प्रेमिका राधा, रुक्मिणी और ललिता की ज्यादा चर्चा होती है।

पति कृष्ण

भगवान श्रीकृष्ण की 8 पत्नियां थीं- रुक्मिणी, जाम्बवंती, सत्यभामा, मित्रवंदा, सत्या, लक्ष्मणा, भद्रा और कालिंदी। इनसे श्रीकृष्ण को लगभग 80 पुत्र हुए थे।

भाई कृष्ण

कृष्ण की 3 बहनें थीं- एकानंगा (यह यशोदा की पुत्री थीं), सुभद्रा और द्रौपदी (मानस भगिनी)। कृष्ण के भाइयों में नेमिनाथ, बलराम और गद थे।

श्रीकृष्ण के माता पिता

श्रीकृष्ण के माता पिता वसुदेव और देवकी थे, परंतु उनके पालक माता पिता नंदबाबा और माता यशोदा थीं। श्रीकृष्ण ने इन्हीं के साथ अपनी सभी सौतेली माता रोहिणी आदि सभी के सात बराबरी का रिश्ता रखा।

अन्य रिश्तों में श्रीकृष्ण

श्रीकृष्ण ने अपनी बुवाओं से भी खूब रिश्ता निभाया था। कुंती और सुतासुभा से भी रिश्ता निभाया। कुंती को वचन दिया था कि मैं तुम्हारे पुत्रों की रक्षा करूंगा और सुतासुभा को वचन दिया था कि मैं तुम्हारे पुत्र शिशुपाल के 100 अपराध क्षमा करूंगा। इसी प्रकार सुभद्रा का विवाह कृष्ण ने अपनी बुआ कुंती के पुत्र अर्जुन से किया था। उसी तरह श्रीकृष्ण ने अपने पुत्र साम्ब का विवाह दुर्योधन की पुत्री लक्ष्मणा से किया था। श्रीकृष्ण के रिश्तों की बात करें तो वे बहुत ही उलझे हुए थे। श्रीकृष्ण ने अपने भांजे अभिमन्यु को शिक्षा दी थी और उन्होंने ही उसके पुत्र की गर्भ में रक्षा की थी।

शत्रुता का रिश्ता

इसी तरह श्रीकृष्ण ने अपनी शत्रुता का रिश्ता भी अच्छे से निभाया था। उन्होंने कंस, जरासंध, शिशुपाल, भौमासुर, कालय यवन, पौंड्रक आदि सभी शत्रुओं को सुधरने के भरपूर मौका दिया और अंत में उनका वध कर दिया।

रक्षक कृष्ण

भगवान श्रीकृष्ण ने किशोरावस्था में ही चाणूर और मुष्टिक जैसे खतरनाक मल्लों का वध किया था, साथ ही उन्होंने इंद्र के प्रकोप के चलते जब वृंदावन आदि ब्रज क्षेत्र में जलप्रलय हो चली थी, तब गोवर्धन पर्वत अपनी अंगुली पर उठाकर सभी ग्रामवासियों की रक्षा की थी।

शिष्य कृष्ण

भगवान श्रीकृष्ण के गुरु सांदीपनी थे। उनका आश्रम अवंतिका (उज्जैन) में था। कहते हैं कि उन्होंने जैन धर्म में 22वें तीर्थंकर नेमीनाथजी से भी ज्ञान ग्रहण किया था। श्रीकृष्ण गुरु दीक्षा में सांदीपनी के मृत पुत्र को यमराज से मुक्ति कराकर ले आए थे।